अज्ञेय के काव्य असाध्यवीणा में व्यक्ति और समाज का अन्त:संबध

डॉ. गीता संतोष यादव
एस.एम.आर.के.बी.के.ए.के.
महिला महाविद्यालय
नाशिक-५
भ्रमणध्वनि न. ९५९४५५६०२०
email : geetayadav.smrk@gmail.com

अज्ञेय के संपूर्ण साहित्य में व्यक्ति और समाज के संबंधों को टकराहट रही है | वस्तुत: अज्ञेय जिस दौर के रचनाकार है उसका सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यही है कि वक्त समाज पर निर्भर है या समाज से निरपेक्ष? यूँ, 'असाध्यवीणा' में यह प्रश्न बहुत खुलकर व्यक्त नहीं हुआ हैं, किंतु गहराई में जाने पर व्यक्ति-समाज संबंधों को टकराहट इसमें भी नजर आती हैं |

यह कविता १९६१ की है | इस समय व्यक्ति समाज को लेकर दो परस्पर विरोधी विचार पनप रहे थे | एक ओर मार्क्सवादी विचारक थे जो व्यक्तित्व को आर्थिक स्थितियों का 'बाइ-प्रोडक्ट' मानने के कारण व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता स्वीकारने को तैयार नहीं थे; तो दूसरी और विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका व यूरोप में पैदा हुई 'भूखी पीढ़ी' (Hungry Generation) तथा अस्तित्ववादियों की मानसिकता थी जो व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता की पक्षधर थी तथा किसी भी तरह के सामाजिक दायित्व मानाने को प्रस्तुत न थी |

अज्ञेय का दृष्टिकोण दोनों अतिवादों से बचा रहा है | हालाँकि उन पर आरोप है कि वे प्रखर व्यक्तिवाद के समर्थक है; किंतु उनकी कविताओं का ईमानदार विश्लेषण जाहिर करता है कि व्यक्ति-समाज मुद्दे पर उनके विचार बेहद सुलझे हुए हैं जो असाध्यवीणा और अन्य कविताओं में दिखाई पड़ते हैं |

अज्ञेय मानते हैं कि व्यक्ति का मूल व्यक्तित्व समाज द्वारा निर्धारित होता है, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों ही उसके व्यक्तित्व को गढ़ती है | अपनी प्रसिद्ध कविता 'नदी के द्वीप' में वे लिखते है-

'हम नदी के द्वीप हैं,

xx xx xx

यह आमीन आकर देती है |'

असाध्यवीणा में भी यही भाव व्यक्त हुआ है | जिन गर्वोन्मत कलावंतों को अपनी महानता का अहसास था, उनमें से कोई वीणा में निहित संगीत को छू भी न सका | किंतु, प्रियवंद संगीत को साध सका तो सिर्फ इसलिए कि वह जानता है कि यह सारा संगीत परंपरा अर्थात समाज की संपत्ति अर्थात् समाज की संपत्ति है, न कि उसकी व्यक्तिगत उपलब्धि कविता एस संबंध में कहती है-

'मुझे स्मरण है,

पर मुझको मैं भूल गया हूँ,

सुनाता हूँ मैं,

पर मैं मुझसे परे, शब्द में लीयमान|'

किंतु, समाज द्वारा निर्मित होने के बावजूद अज्ञेय व्यक्तित्व को प्रगतिवादियों की तरह सिर्फ आर्थिक स्थितियों का उप-उत्पाद (By-Product) नहीं मानते | अज्ञेय की स्पष्ट धारणा है कि समान सामाजिक-सांकृतिक पर्यावरण में विद्यमान होने के बावजूद प्रत्येक व्यक्ति का स्वधर्म भिन्न है | यदि समाज व्यक्ति की निजता का सम्मान नहीं करता और उसके मूल व्यक्तित्व का दमन करता है तो समाज कभी सभ्य नहीं माना जा सकता | 'नदी के द्वीप' का ही वाक्य है -

'किंतु हम बहते नहीं हैं,

क्योंकि बहाना रेत होना है,

हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं |'

असाध्यवीणा में भी अज्ञेय का यही स्थायी भाव व्यक्त हुआ ही | प्रत्येक वक्ती ईश्वर की ही अभिवक्ति है, किंतु वह अन्य व्यक्तियों से भिन्न तथा अनूठा है | कीकेंगर्द जैसे अस्तित्ववादियों के शब्दों में तो हर व्यक्ति की अंतरात्मा भिन्न है और उसे अपनी अंतरात्मा के अनुसार ही जीना चाहिए | प्रियंवद द्वारा वीणा को साध लेने पर संगीत का प्रभाव सभी पर उनके 'स्वधर्म' के अनुसार ही भिन्न-भिन्न पड़ा है-

'डूब गए सब एक साथ,

सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे ,

xx xx xx xx

राजा ने अलग सुना,

xx xx xx

रानी ने भी अलग सुना |"

अज्ञेय ने इस प्रश्न पर भी विचार किया है कि व्यक्ति का समाज के प्रति क्या दायित्व है ? वे मार्क्सवादियों की तरह सामाजिक दायित्व को व्यक्ति पर थोपना नहीं चाहते | उनकी राय है कि यदि व्यक्ति अपने 'स्वधर्म' के अनुसार जीता है तो उसकी क्षमता और उत्पादकता स्वयमेव बढ़ जाती है | जिस समाज में सभी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुकूल कर्म करते हैं, वहाँ क्रन्तिकारी परिवर्तन खुद-ब-खुद हो जाते हैं | यही वीणा के प्रभाव से हुआ है-

'उठ गई सभा | सब अपने-अपने काम लगे,

युग पलट गया |'

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अज्ञेय ने अपनी अन्य रचनाओं की तरह असाध्यवीणा में भी व्यक्ति-समाज संबंधों पर अपनी ठोस राय वक्त की है | उनके विचार का सार एक वाक्य में यही कि "व्यक्ति समाज 'में' स्वतंत्र है, समाज 'से' नहीं |"

सन्दर्भ:

१) हंस(मासिक) पत्रिका : जनवरी २०२१,संपादक:: संजय सहाय

२) आलोचना (त्रैमासिक) पत्रिका :अक्टूबर-दिसंबर २०२०,संपादक :: आशुतोष कुमार

३) http://www.aapkiummid.com

४) https://www.facebook.com/aapkiummid

५) असध्यावीणा:सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायान "अज्ञेय"